

व्याकरण

1. 'ओ' का उच्चारण स्थान है -
→ पृष्ठीय

2. 'व' का उच्चारण स्थान है -
→ दंतीय

3. वर्ण कितने प्रकार के होते हैं?
→ दो

4. स्वर्ण वर्णों की संख्या कितनी है?
→ ग्यारह

5. व्यंजन वर्ण कितने प्रकार के होते हैं?
→ तीस

6. 'ऊ' वर्ण का उच्चारण स्थान है?
→ ऊँ

7. हिन्दी में वर्णों की कुल संख्या कितनी है?
→ चौवलस

8. 'ल' और 'लृ' का उच्चारण स्थान कितना है?
→ दंत

9. 'राष्ट्रीयता' शब्द में 'रा' स्त्री संज्ञा है।
→ भाववाचक ।

10. 'सुरदास' शब्द में 'दा' स्त्री संज्ञा है।
→ भाववाचक ।

11. 'उड़ना' क्रिया है। भाववाचक संज्ञा होगी।
→ उड़ान

12. 'अच्छा' विशेषण है। भाववाचक संज्ञा होगी।
→ अच्छाई ।

13. 'अभिर्नता' शब्द का स्त्री लिंग होगा।
→ अभिर्नती ।

14. 'समापति' शब्द का स्त्री लिंग रूप लिखें।
→ समापत्नी ।

15. 'शिक्षक' शब्द का स्त्री लिंग होगा।
→ शिक्षिका ।

16. 'आचार्य' शब्द का स्त्री लिंग होगा।
→ आचार्याणी ।

17. 'अहं' शब्द का स्त्रीलिंग होगा -
→ अहंस्त्री

18. 'तुम्हें' शब्द का स्त्रीलिंग होगा -
→ तुम्हेंस्त्री

19. 'वह' का 'मैं' या 'आप' का लिंग -
→ अन्य पुरुष

20. 'यह' व 'वहाँ' का सर्वनाम -
→ निश्चय वाचक सर्वनाम

21. 'होना' का सर्वनाम -
→ अनिश्चय वाचक सर्वनाम है

22. 'आप' का सर्वनाम - आप

23. 'आप' का सर्वनाम - आप ही 'आप' संबंध में 'आप' सर्वनाम है?
→ मित्र वाचक सर्वनाम

23. नियम का विशेषण है -

→ नियमित

24. विशेषण के उचित मंद होत हैं?

→ न्यार

25. तू जिन्दा है तू

1. तू जिन्दा है तू शीर्षक पाठ
गद्य की कौन सी विधा है

→ कविता

2. तू जिन्दा है तू कविता में जीवन
कौन सा दृश्य प्रस्तुत है?

→ गहरा जीवन राग एवं उत्साह

26. स्वराज्य का अर्थ है -

→ स्वयं का राज्य

27. तू जिन्दा है तू कविता में जीवन
के किस पक्ष का वर्णन है?

→ आशावादी

5. ... जिन्दा ... कवि ...

→ शंकर शैल्य /

6. ... मनुष्य ... जीवन ...

→ ... उस्ताह पूर्ण

7. ... जिन्दा ... माना जाता है

→ ... स्वामिमाननी

8. ... किताब ... क्या होता है

→ ... नूतनीर्माण ... होता है

2. ... इदगाह

1. ... इदगाह ... आधारित है ?

→ ... वालु ... पर

2. ... इदगाह ... वंचित ... परिस्थिति ... विपणी ...

→ सामिति

3. कुसुम जीवन बाल मन ही लार-उ
रु तरे सर्जन के लिए
मजबूर बना है ?

→ अभावग्रस्त

4. हामिद खिलाने की जगह अपनी
दाहिने कंधे पर खरीदकर
लाता है

→ चिमटा

5. इंदगाह की शीर्षक कथानी किसकी
रचना है ?

→ मुंशी प्रेमचंद

6. अमीना कुंज की ?

→ हामिद की दाहिनी

7. रामजान की कितने दिनों बाद
ईद आती है ?

→ तीस दिनों बाद

8. हामिद ने चिमटा क्यों खरीदा ?

→ क्योंकि रेली स्टेशन में दाहिनी
का दाहिना जलता था

कर्मवीर

1. व्याक्ति का कौन सा गुण सफलता के लिए निर्धारणकारी है?
→ कर्म के प्रति ।

2. अयोध्या सिंह उपाध्याय लिखित शीर्षक का पाठ है -
→ कर्मवीर ।

3. सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में और निर्माता हैं?
→ कर्मवीर ।

4. 'कर्मवीर' का उद्देश्य पहचान है?
→ जो कर्म के प्रति निष्ठा रखते हैं ।

5. 'कर्मवीर' शीर्षक कविता किस भाषा में लिखी गयी है?
→ उड़ीसा हिन्दी ।

6. कर्मवीर पुरुष क्या होते हैं?
→ कर्मवीर पुरुषवादी होते हैं ।

7. परिश्रम के द्वारा समाप्तित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए
→ कर्मवीर ।

1. इद के दिन अमीना क्यों उदास थी?
 => इद के दिन अमीना अपनी दीनता, वसधारापन तथा आर्थिक दुर्दशा के कारण उदास थी। वह सोच रही थी कि अपने अनाथ परिवार को इस महान पर्व के अवसर पर मर्ल जानने के लिए कैसे कष्ट सहनी होगी, क्योंकि उसके घर में दाना भी नहीं थी।

2. दामिद मिठाई या खिलौने के बदले चिमटा पसंद करता है, क्यों?

=> दामिद मिठारयां या खिलौने के बदले चिमटा इसलिए पसंद करता है क्योंकि सोटी संकल समय दादी की उंगली जल जाती थी अगर वह चिमटा लंकर दादी को दंगा उसकी उंगली नहीं जलंगी। मिठाई या खिलौने क्षणिक सुख देने वाले हैं। इसीलिए उसने चिमटा ही पसंद किया।

4. मेल म विमल खरीदने से पहले
 दामिद मन म कौन - कौन
 से विचार आये ? वर्णन कीजिए।

⇒ मेल म विमल खरीदने से पहले
 दामिद मन म कौन - कौन
 से विचार

⇒ मेल म विमल खरीदने से
 पहले खिलाने खरीदने तथा
 मिठाई खाने के बाद विचार आए
 लेकिन उसके पास तालमालीन पैस
 ही थे इसलिए इन चीजों
 का खरीदना मुश्किल विचार था।
 वह लोहे की दुकान पर गया।
 वहाँ विमल देख उसे कपाल
 आया कि जगदादी उसके विमल
 नहीं ही।

7. विमल देखकर अमीनान के मन में
 कैसा भाव जग गया?

⇒ विमल देखकर अमीनान के मन में
 क्रोध तथा संद था।

जग | उसने धारी पीछे कहां
 कि तुम वसमझ लड़का है,
 क्यों कि तुमने कुछ खोया -
 पिया नहीं लेकिन हमिद
 की बात सुनकर उसका फाय
 स्नेह में बदल गया कि

4. साहब हमारे जीवन के अमिन्न
 अंग है। इस कथन की
 व्याख्या कीजिए।

=> साहब हमारे जीवन के अमिन्न
 अंग है। इस कथन के माध्यम
 से यह बताया गया है कि
 साहब मानव जीवन में खुशी
 का क्षण होता है। इस खुशी
 के समय मानव साहब महमावों
 से अपट उठकर सहज
 मानव बन जाता है। ये
 साहब एतिहासिक सांस्कृतिक, सामाजिक
 तथा पौराणिक गथाओं पर
 अंधारित है। जो हमें साहब
 महमाव सहिष्णुता उत्साह तथा सबसे
 प्रेम करने की सीख देता है।

1. कर्मवीर की पहचान क्या है
 => कर्मवीर विषम परिस्थिति में भी सहज बन रहते हैं। वे माग्यवादी नहीं, कर्मवादी होते हैं। वे हर काम तल्लण करने का प्रयास करते हैं। किसी भी काम को कुल पूरा होना उनकी आदत नहीं होती। वे अपनी दृढ़ता से विपरीत परिणामों को अनुकूल बना लेते हैं। उनका सिद्धान्त कर्ता या मरा होता है।

Q.1. परिश्रमी के द्वारा मनावांछित लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है।
 => परिश्रमी के द्वारा मनावांछित लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। इसके लिए किसी भी व्यक्ति को तन-मन से उस कार्य में प्रति समर्पित होना आवश्यक होता है। जब कोई व्यक्ति पूर्ण उत्साह के साथ लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम

करता है तो उसका आत्मविश्वास
 बढ़ता जाता है। यही आत्मविश्वास
 इस चर्ममार्ग में आनंदशाली
 वाधाओं से लड़ने तथा छुट
 सहन करने की शक्ति प्रदान
 करता है।

3. आप किस अपना आदर्श मानते हैं और
 क्यों?

=> मैं अपना आदर्श महात्मा गांधी जी
 मानता हूँ, जिन्होंने 'सत्य अहिंसा'
 के बल पर अंग्रेज जैसे शक्तिशाली
 शासकों को बिना अस्त्र-शस्त्र
 उठाए भारत छोड़ने पर मजबूर
 कर दिया और भारत को
 आजादी दिलवाई। इसका मुख्य
 कारण यह था कि वापू जी
 निश्चय करते थे। उसकी पूजा
 के लिए अपने को अर्पित कर
 देते थे। अंग्रेजों ने उन्हें
 हृदयविदारक यतनाएँ दीं, फिर भी
 गांधीजी अपने लक्ष्य से च्युत
 नहीं हुए।

3. पुत - पथु द्वारा पुत जी मुखगिन
 दिलपाना मगत के अकित स
 जी किस विशासता को दर्शाता है?

=> पुतपथु द्वारा पुत जी मुखगिन
 दिलपाना यह सिद्ध करता है कि
 वालगाँबिन मगत रुदिपादी विचारी
 के कट्टरे-कट्टरे विशासी हैं। वह उन
 प्रचलित समाजिक परम्पराओं के
 विशासी हैं, जो विकृत की
 कसौटी पर खरी नहीं उतरती थी।
 यही कारण है कि पुत जी
 मृतु होने पर मुखगिन पुतपथु
 से दिलपाई, जब कि अन्यता है
 कि मृत शरीर को मुखगिन पुरुष
 को के हाथों में ली जाती है।

2. धर्म का मर्म आचरण उमें है,
 अनुष्ठान में नहीं। स्पष्ट जीजिए

=> इस कथन के माध्यम से लेखक
 ने यह स्पष्ट कर दिया है कि
 प्रयास किया है कि धर्मपालन
 आडम्बरी या अनुष्ठानों के

निर्दिष्टता में जानधी; बल्कि आचरण

की पवित्रता और शुद्धता में

होता है। जब व्यक्ति अपने

सिद्धान्त के अनुरूप आचरण

करता है, जब तक अपनी

कर्मों से एक जैसी नहीं होती है

तथा जो आप अपनी दिनपथ और

निर्णय मनुष्यता के अनुरूप

करता है, वह जीवन मूल्य को

सही रूप में जानता होता है।

2. वालगाविन मगत कवीर को 'साहब'

मानते थे। इसके क्या न क्या

कारण हैं? इसको

=> वालगाविन मगत कवीर को 'साहब'

इस कारण मानते थे। क्योंकि

वह कवीर द्वारा बताने गए

आदर्श को पालन करने थे।

मगत भी कवीर की माँति

शुद्धता को वालगाविन और

उपरा अपहार को रखा है।

भाषा-उच्चरित ध्वनि-संकेतों की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण-आवेक्यता अथवा जिसकी मदद से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय या सहयोग करते हैं, उसे यादृच्छिक, रुढ़ ध्वनि-संकेत की प्रणाली को भाषा कहते हैं।

भाषा तीन प्रकार के होते हैं -
 (i) भाषा ध्वनि-संकेत - सार्थक शब्दों के समूह या संकेतों को भाषा ध्वनि-संकेत कहते हैं। जैसे - रेलगाड़ी का गींट हॉर्न, हंडी दिखाकर यह भाव व्यक्त करता है कि रेलगाड़ी अब खुलने वाली है।

(ii) लिखित भाषा - जिस शब्द को लिखकर किसी को समझाने या बताने का प्रयास किया जाता है, उसे लिखित भाषा कहते हैं। जैसे - कुत्ता, हाथी, बिल्ली आदि।

(iii) मौखिक भाषा - जिस शब्दों को हम बोलकर किसी को समझाने का प्रयास करते हैं, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। जैसे - बच्चा, बुढ़ा, जवान आदि।

अनुनासिक - ऐसे स्वरो का उच्चारण करते समय नाक से कम तथा मुँह से अधिक ध्वनि निकलती है, उसे अनुनासिक कहते हैं। जैसे - गोंग, दौंत, आवाज आदि।

अनुस्वार (ँ) - यह स्वर के बाद आनेवाला व्यंजन है, जिसका उच्चारण करते समय नाक से ऊपर तथा मुँह से कम ध्वनि निकलती है, उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे - अँसा, हँस, अँगूर आदि।

निरनुनासिक - ऐसा स्वर वर्ण जिसका उच्चारण केवल मुँह द्वारा निकली गई ध्वनि से होता है, उसे निरनुनासिक कहते हैं। जैसे - इधर, उधर, आप, अपना, धर इत्यादि।

वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका खंड या टुकड़ा नहीं किया जा सकता है। जैसे - अ, आ, इ, ई, उ, ए, ऐ, औ, ओ, औ।
 वर्ण दो प्रकार के होते हैं -

(i) स्वर वर्ण - वैसे वर्ण जिसका उच्चारण स्वतंत्र होता है, उसे स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे, अ, आ, इ, ई, उ, ए, ऐ, औ, ओ, औ।

(ii) द्रव्य स्वर वर्ण - वैसे वर्ण जिसका उच्चारण करने में अति-अल्प समय लगता है, उसे द्रव्य स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - अ, इ, उ, ए, ऐ, औ, ओ, औ।

(iii) दीर्घ स्वर वर्ण - वैसे वर्ण जिसका उच्चारण करने में द्रव्य स्वर वर्ण की अपेक्षा दोगुना समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, औ, ओ, औ।

(iv) लुप्त स्वर वर्ण - वैसे वर्ण जिसका उच्चारण करने में द्रव्य स्वर की अपेक्षा तीन गुना समय लगता है, उसे लुप्त स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - आँउम, आँउम।

व्यंजन वर्ण - वैसे वर्ण जिसका उच्चारण करने में स्वर वर्ण की मदद ली जाती है, उसे व्यंजन वर्ण कहते हैं। जैसे - क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व।

(i) स्पर्श व्यंजन - वैसे वर्ण जिसका उच्चारण कंठ, तालु, मुँह, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्श करने से होता है, उसे स्पर्श व्यंजन कहते हैं। जैसे - क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व।

(ii) अंतःस्थ व्यंजन - वैसे वर्ण जिसका उच्चारण कंठ, तालु, दंत और ओष्ठ के स्पर्श से होता है, उसे अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। अंतःस्थ व्यंजन को 'अर्द्धस्वर' भी कहा जाता है। जैसे - य, र, ल, व।

(iii) अल्प व्यंजन - जैसे वर्ण जिनका उच्चारण हमारे शरीर के अंदर एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्म वायु से होता है, उसे अल्प व्यंजन कहते हैं। जैसे - श, ष, र, ह ।

वायु प्रक्षेप की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं -

(i) अल्प प्राण - वैसे वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास पहले से अल्प मात्रा में निकले तथा जिनके हकार जैसी ध्वनि नहीं होती है, उन्हें अल्प प्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण तथा अंतःस्थ व्यंजन अल्प प्राण व्यंजन हैं।

(ii) महा प्राण - वैसे वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास अधिक मात्रा में तथा हकार जैसी ध्वनि विशेष रूप से निकलती है, उसे महा प्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का दूसरा एवं चौथा वर्ण तथा ऊष्म व्यंजन वर्ण महा प्राण व्यंजन हैं।

नाद की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं -

(i) अधोष वर्ण - वैसे वर्ण जिनका उच्चारण करने में हमारी स्वरतंत्रियों झंझूत नहीं होती है, उसे अधोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला एवं दूसरा वर्ण तथा श, ष, र ।

(ii) अधोष वर्ण - वैसे वर्ण जिनका उच्चारण करने में हमारी स्वरतंत्रियों झंझूत होती है, उसे अधोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण, स्वधी स्वर वर्ण, य, र, ल, व और ह ।

विस्मृति (:) अनुस्वार की तरह प्रयोग होनेवाला यह स्वर व्यंजन वर्ण है तथा इसका उच्चारण 'ह' की तरह होता है। हिन्दी में अब इसका अभाव होता जा रहा है, लेकिन तत्सम शब्दों के प्रयोग में इसका आज भी उपयोग होता है। जैसे - पयः पान, प्रातः काल, अतः इत्यादि।

बलाघात (स्वराघात) - बोलते समय अर्ध या उच्चारण की रूपरत्ता के लिए जब हम किसी अक्षर पर विशेष बल देते हैं, तो इस क्रिया का बलाघात या स्वराघात कहा जाता है। जैसे - विष्णु, इन्द्र, राम, इत्यादि।
संगम - उच्चारण करते समय दो ध्वनियों के बीच जो मिस्रण आता है, उसे संगम कहते हैं। जैसे - तुम्हारे, उत्पन्न इत्यादि।

अनुताप - बोलने के क्रम में जो सुर में उतार-चढ़ाव होता है, उसे अनुताप का स्वरूप कहते हैं। जैसे - कौन करेगा, तथा करेगा कौन ?

लिपि - वर्णों को लिखने के लिए जिन स्यांकेतिक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उसे लिपि कहते हैं। जैसे - 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 998, 999, 1000.

ध्वनि - भाषा की सबसे छोटी इकाई को ध्वनि कहते हैं।

वर्तनी - वर्णों/ध्वनियों को ठीक ढंग से लिखने की रीति को वर्तनी कहते हैं।

अयोगवाह - वैसा वर्ण जो न तो स्वर है न व्यंजन फिर भी वह ध्वनि का वहन करता है, उसे अयोगवाह कहते हैं। जैसे, अँ, अः ।

हल - व्यंजन वर्णों के निचे जब शक्ति रिकी रेखा (-) लगाई जाती है, उसे हल कहते हैं। हल लगाने का अर्थ है कि व्यंजन में स्वरवर्ण का बिलकुल अभाव है या व्यंजन आधा है। जैसे - क, ख, - -

वर्ण - विच्छेद - वर्णों को अलग करने की रीति को वर्ण - विच्छेद कहते हैं। जैसे - क - क + अ ।

पंचमाक्षर - अनुनासिक वर्णों को ही पंचमाक्षर वर्ण कहते हैं। जैसे - उ, ञ, ण, न, म ।

संयुक्ताक्षर - वैसा वर्ण जिसमें दो या दो से अधिक व्यंजन वर्णों का मेल होता है, उसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं। जैसे, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ।

उच्चारण स्थान का विवरण -

स्थान	वर्ण	नाम
कंठ	अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ	कंठ्य वर्ण
तालु	इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श	तालव्य वर्ण
मूढ़ा	ऋ, ए, ऌ, ड, ढ, ण, र, ष	मूढ़व्य वर्ण
दंत	त, थ, द, ध, न, ल, स	दंत्य वर्ण
ओष्ठ	उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ्य वर्ण
कंठ-तालु	ए, ऐ	कंठ-तालव्य वर्ण
कंठ-ओष्ठ	ओ, औ	कंठोष्ठ्य वर्ण
दंतोष्ठ	व	दंतोष्ठ्य वर्ण
नासिका	ङ, ञ, ण, न, म	नासिक्य वर्ण

संज्ञा

संज्ञा - किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव, गुण, दोष, मात्रा, अनुभव आदि को संज्ञा कहते हैं। जैसे - राम, पुस्तक, मेला, लड्डा इत्यादि। संज्ञा के पाँच भेद होते हैं -

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष या खास व्यक्ति, स्थान, नाम का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - राम, रामायण, हिमालय आदि।

(ii) जातिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - पहाड़, गाय आदि।

(iii) समूहवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी झुंड, समूह या समुदाय का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - सेना, वन, सभा, गुच्छा इत्यादि।

(iv) द्रव्यवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी द्रव्य या धातु, वस्तु की परिमाण / मात्रा का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - सोना, चाँदी, ली, तेल इत्यादि।

(v) भाववाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु के गुण, दोष, धर्म, स्वभाव इत्यादि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - बुढ़ापा, ईमानदारी, महत्ता इत्यादि।

सर्वनाम

सर्वनाम - संज्ञाओं अथवा नामों के बदले जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे - मैं, वह, तुम, आप, जो इत्यादि। सर्वनाम के भेद -

(i) पुरुषवाचक - बोलने वाले, सुननेवाले तथा जिसके विषय में जो कुछ कहा या सुना जाये, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - मैं, हम, तुम, वह इत्यादि। पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद -

(i) उत्तम पुरुष - बोलनेवाले को उत्तम पुरुष कहते हैं। जैसे - मैं, हम, मैंने, मुझको इत्यादि।

(ii) मध्यम पुरुष - सुननेवाले को मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे - तुम, आप, तू, तुमलोग इत्यादि।

(iii) अन्यपुरुष - जिसके विषय में कुछ कहा या सुना जाये, उसे अन्यपुरुष कहते हैं। जैसे - वह, वे, लोग, यह, वे, ये इत्यादि।

(iv) निश्चयवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति या भाव के निश्चय होने का बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - यह, वह, इत्यादि।

(3)

(ग) अनिश्चय वाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव के अनिश्चय होने का बोध होता है, उसे अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - कोई, कुछ आदि।

(घ) संबंधवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी संज्ञा के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - वह कौन है, जो दरवाजे पर खड़ा है।

(ङ) निजवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से स्वयं या निज का बोध होता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - मैं यह काम स्वयं ही कर लूँगा।

(च) प्रश्नवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से प्रश्न पूछने या करने का बोध होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - कौन, क्या, कहाँ, क्यों इत्यादि।

(4)

विशेषण

विशेषण - संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। जैसे - काला, मोटा, छोटा, कमजोर इत्यादि। विशेषण के भेद -

(i) गुणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के गुण, दोष, स्वभाव, अवस्था का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं, जैसे - काला, मोटा, शोल, भूखा इत्यादि।

(ii) परिमाणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी वस्तु की माप-तौल या परिमाण/मात्रा का बोध होता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - थोड़ा, कम इत्यादि।

(iii) संख्यावाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु की संख्या का बोध होता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - ~~उत्तम~~ तीन पुस्तकें, चार कवचें हैं आदमी इत्यादि।

(iv) सार्वनामिक विशेषण - किसी संज्ञा के पहले आने वाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं, जैसे - यह पुस्तक अच्छी है।

(5)

क्रिया

क्रिया - जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे - वह पढ़ता है। मैं खोता हूँ।

क्रिया के भेद -

(i) सकर्मक क्रिया - जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म रहता है तथा क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे - राम पुस्तक पढ़ता है।

(ii) अकर्मक क्रिया - जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म नहीं रहता तथा क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे - राम पढ़ता है।

सहायक क्रिया -

मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट करने में जो क्रियाएँ सहायता करती हैं, उसे सहायक क्रिया कहते हैं। जैसे - है, था, रहे, गा, खड़े, इत्यादि।

प्रेरणार्थक क्रिया -

जिन क्रियाओं से यह पता चलता है कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे से करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे - राम, मोहन से काम कराता है।

(6)

वाच्य

क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा यह ज्ञात होता है कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है तथा इनमें किसके अनुसार क्रिया के पुरुष, लिंग, वचन आदि आवे हैं।

वाच्य के भेद -

(i) कर्तृवाच्य - क्रिया के उस रूपान्तर को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो। जैसे - लड़का आम खाता है। मोहन पुस्तक पढ़ता है।

(ii) कर्मवाच्य - क्रिया के उस रूपान्तर को कर्मवाच्य कहते हैं, जहाँ वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध होता है। जैसे - पुस्तक पढ़ी जाती है।

(iii) भाववाच्य - क्रिया के उस रूपान्तर को भाववाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में भाव की प्रधानता रहती है। जैसे - धूप में चला नहीं जाता।

प्रविशेषण -

विशेषण की विशेषता बतलाने वाले शब्द को प्रविशेषण कहते हैं। जैसे - राम बहुत तेज विद्यार्थी है। यहाँ 'तेज' विशेषण है और उसका भी विशेषण है 'बहुत'।

लिंग

(7)

संज्ञा, स्वर्णनाम या क्रिया के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव की जाति (स्त्री या पुरुष) का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। जैसे - राजा, घोड़ा, लड़का, लड़की, कुता - कुतिया इत्यादि।

लिंग के भेद -

(1) पुँलिंग - जिस शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुँलिंग कहते हैं। जैसे - बालक, स्वर्णनाम आदि।

(2) स्त्रीलिंग - जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं। जैसे - रानी, घोड़ी, लड़की इत्यादि।

पुँलिंग शब्दों का लिंग-निर्णय -
(क) अकारांत तत्सम शब्द पुँलिंग होते हैं। जैसे - धन, जन, वन, जल आदि।

(ख) हिन्दी के अकारांत शब्द पुँलिंग होते हैं। जैसे - लड़का, पटाखा इत्यादि।
नोट - उक्त नियम के कुछ अपवाद भी हैं।

स्त्रीलिंग शब्दों का लिंग-निर्णय -
आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत तत्सम शब्द स्त्रीलिंग होते हैं।

जैसे - दूया, माया, आशा, घोषणा, सूचना, ईर्ष्या, इच्छा इत्यादि।
भूति, नारी, गोष्ठी, मृत्यु, वस्तु, अस्तु, वायु आदि।

(8)

लिंग-निर्णय के सामान्य नियम -

(क) जिन शब्दों के अंत में 'ल', 'ना', 'आ', 'आटा', 'आव', 'आवा', 'ओड़ा', 'पन' इत्यादि प्रत्यय लगते हैं, वे पुँलिंग होते हैं। जैसे - महल, पढ़ना, शौर्य, घेरा, सुन्नाटा, बुढ़ापा, फूलाव, पहनावा, पकौड़ा, मित्र, बचपन, पागलपन इत्यादि।

(ख) जिन शब्दों के अंत में 'आई', 'आवट', 'आस', 'आहर', 'दूया', 'ई', 'त', 'नी', 'री', 'ली' इत्यादि प्रत्यय लगते हैं, वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - मलाई, बनावट, मिठास, चषराहट, टिकिया, गरीबी, चाहत, चटनी, कोठरी, उफली इत्यादि।

(ग) संस्कृत (तत्सम) के अकारांत शब्द पुँलिंग तथा आकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - जल, स्वर्ण, मिष्टा, शिक्षा परीक्षा इत्यादि।

(घ) तद्भव (हिन्दी) के लिंग प्रायः तत्सम (संस्कृत) के लिंग के अनुसर होते हैं। जैसे - आश्चर्य अचक्षु, सँघा - सँघ, स्वर्ण - खोना इत्यादि।

(ङ) हिन्दी की प्रवाचक संज्ञा पुँलिंग होती हैं। जैसे - लोहा, चूना, मोती, दही, घी, तेल, खोना इत्यादि।

अपवाद - चौंकी स्त्रीलिंग है।

संख्या का बोध कराने वाले शब्द वचन कहलाते हैं। जैसे - लड़का, घोड़े आदि वचन के भेद -

(i) एकवचन - संज्ञा के जिस रूप से उसके एक होने का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे - लड़का, घर, कलम इत्यादि।

(ii) बहुवचन - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे - घोड़े, नदियाँ इत्यादि।
वचन परिवर्तन के नियम -

(i) आकारान्त शब्दों के अंत में 'ए' लगाकर बहुवचन शब्द बनाते हैं। जैसे - लड़का - लड़के, घोड़ा - घोड़े इत्यादि।

(ii) व्यंजनांत मूल शब्दों के अंत में 'ए' का लोप कर उसके स्थान पर 'एँ' लगाकर बहुवचन बनता है। जैसे - नहर - नहरें, रात - रातें इत्यादि।

(iii) आकारान्त/उकारान्त/ओकारान्त वाले शब्दों में अंतिम स्वर का लोप नहीं होता है, अंतिम स्वर के बाद 'एँ' लगाते हैं। जैसे - महिला - महिलाएँ, बधू - बधुर्ये इत्यादि।

(iv) ईकारान्त संज्ञा शब्दों में 'ओं' बहुवचन सूचक प्रत्यय लगता है तो अंतिम स्वर 'ई' का दूसरा 'इ' हो जाता है। जैसे - नारी - नारियाँ, टोपी - टोपियाँ इत्यादि।

(v) समुदाय सूचक शब्दों का प्रयोग बहुवचन में होता है। जैसे - मनुष्य, जनता, भीड़, मवेशी इत्यादि।

(vi) कुछ शब्दों के एकवचन एवं बहुवचन एक समान होते हैं। जैसे - क्रोध, भय, दान, स्वामी, तपस्वी इत्यादि।

(vii) लोभ, दर्शन, प्राण, बाल, हस्ताक्षर आँसू, समाचार सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

(viii) दूध, प्रेम, जल, दूध, वर्षा, हवा, आग सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं।

(ix) कुछ शब्दों के बहुवचन बनाने के लिए शब्दों के अंत में 'गण' या 'वृन्द' लगाते हैं। जैसे - कर्मचारी-गण, शिक्षकगण, दानव वृन्द इत्यादि।

पद -

जब वाक्य में शब्द के साथ विभक्ति लगी रहती है, उसे पद कहते हैं। अर्थात् विभक्ति सहित शब्द पद कहलाते हैं। जैसे, राम पुस्तक को पढ़ा है।
पद - परिचय - पद परिचय का अर्थ होता है, पदों का अन्वय, अर्थात् विश्लेषण।

वाक्य के प्रत्येक पद को अलग-अलग उसका स्वरूप और दूसरे पद से संबंध बनाना 'पद-परिचय' कहलाता है। जैसे - राम कहता है कि मैं मोहन की पुस्तक पढ़ सकता हूँ।

कारक

संज्ञा या स्वर्णनाम के जिस रूप और कार्य से उनका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। जैसे - मैंने पत्र लिखा। राम ने मोहन को पीटा।

कारक के भेद -

(i) कर्ता कारक - संज्ञा के जिस रूप से क्रिया करनेवाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। जैसे - तुमने आम खाया। इसका परसर्ग 'ने' होता है।

(ii) कर्म कारक - वाक्य में क्रिया का फल जिन शब्द पर पड़ता है, उसे कर्मकारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'को' है। जैसे - मोहन ने आम खाया।

(iii) करण कारक - जो क्रिया की सिद्धि में साधन के रूप में काम आये, उसे करण कारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'से' है। जैसे - राम ने रावण को बाण से मारा।

(iv) सम्प्रदान कारक - संज्ञा या स्वर्णनाम के जिस रूप से किसीको कुछ दिये जाने या किसी के लिए कुछ करने का बोध हो, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे - वह मेरे लिए पानी लाता है। इसका परसर्ग 'के' है। लिए, वास्ते, के हेतु होता

निर्विध

(v) अपादान कारक - संज्ञा या स्वर्णनाम के जिस रूप से किरह, विद्वाना, दूरी, तुलना आदि का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे - पेड़ से पत्ते गिरते हैं। इसका परसर्ग 'से' होता है।

(vi) संबंध कारक - संज्ञा या स्वर्णनाम के जिस रूप से किसी एक वस्तु का अन्य वस्तु के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'का, की' होता है। जैसे - मोहन की गाड़ी।

(vii) अधिकरण कारक - संज्ञा या स्वर्णनाम के जिस रूप से आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे - दंत पर लड़का बैठा है। इसका परसर्ग 'में' पर होता है।

(viii) सम्बोधन कारक - जिस शब्द से किसी को पुकारने या बुलाने का भाव प्रकट होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। इसका परसर्ग "हे, हाँ, अरे, ओ" होता है। जैसे - हे, राम वहाँ आओ।

- (i) विहार पहले और अब
 - (ii) फात्र और अनुशासन
 - (iii) स्वमय की महता
 - (iv) देहेज प्रथा
 - (v) बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
 - (vi) आतंकवाद
 - (vii) बेकारी की समस्या
 - (viii) वृक्षारोपण
 - (ix) प्रदूषण
 - (x) खेल का महत्व
 - (xi) साम्प्रदायिकता
 - (xii) बहु बढती हुई महंगाई
 - (xiii) नारी शिक्षा
 - (xiv) जनसंख्या विस्फोट
 - (xv) आदर्श फात्र
 - (xvi) युवा पीढ़ी एवं नशीला पदार्थ
 - (xvii) स्वच्छता
- नोट - विद्यार्थी/गण उपरोक्त निर्विध की तैयारी अपने-अपने स्तर से करेंगे।